महासागरीय धाराएँ

प्रलिम्सि के लयि:

लहरें, ज्वार-भाटा, महासागरीय धाराएँ, कोरिओलिस प्रभाव, अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (ACC), मानसून, गल्फ स्ट्रीम, कुरोशियो धारा, अगुलहास धारा, हिंद महासागर।

मेन्स के लयि:

महासागरीय धारा, प्रकार, विशेषताएँ, गठन, जलवायु पर प्रभाव, मत्स्य पालन और नेविगेशन, प्रमुख महासागरीय धाराएँ।

महासागरीय धाराएँ क्या हैं?

परिचय:

- महासागरीय जल की गति निरंतर होती है और इसे तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: **लहरें, ज्वार-भाटा** और **महासागरीय धाराएँ**।
- महासागरीय धाराएँ सागरीय जल की **निरंतर, पूर्वानुमानित, दिशात्मक गति** हैं। यह सागरीय जल की विशाल गति है जो विभिन्न बलों के कारण और उनसे प्रभावित होती है।
- वे समुद्र में बहने वाली नदियों के समान हैं।
- महासागर का जल दो दिशाओं में बहता है: **क्षैतिज** और **ऊर्ध्वाधर**।
  - क्षैतिज गति को **धारा** कहा जाता है , जबकि ऊर्ध्वाधर परिवर्तनों को **अपवेलिंग या डाउनवेलिंग** कहा जाता है।

महासागरीय धाराओं के प्रकार:

- **गहराई के आधार पर:**
  - **सतही धाराएँ:** ये धाराएँ, मुख्य रूप से **सौर ऊर्जा** से संचालित **वैश्विक पवन प्रणालियों** द्वारा संचालित होती हैं, जो महासागर के ऊपरी 400 मीटर में होती हैं तथा महासागर के कुल जल का लगभग **10%** होती हैं।
    - उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों से ध्रुवों की ओर गर्म जल ले जाकर, सतही धाराएँ स्थानीय और वैश्विक जलवायु को नियंत्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
    - उदाहरण के लिये: **गल्फ स्ट्रीम (अटलांटिक महासागर), कुरोशियो धारा (प्रशांत महासागर), अगुलहास धारा (हिंद महासागर)**।
  - **गहरे जल की धाराएँ:** शेष **90% महासागरीय जल** तापमान और लवणता भिन्नताओं के कारण जल घनत्व में परिवर्तन से प्रभावित होता है, जिसे **थर्मोहैलाइन सर्कुलेशन** के रूप में जाना जाता है।
    - ये धाराएँ तब उत्पन्न होती हैं जब घना, ठंडा जल गहरे महासागरीय बेसिनों में अवक्षेपित हो जाता है, विशेष रूप से उच्च अक्षांश क्षेत्रों में, जिससे वैश्विक "**कन्वेयर बेल्ट**" का निर्माण होता है।
    - सतही और गहन धाराओं की यह विशाल, परस्पर संबद्ध प्रणाली हज़ारों वर्षों से विश्व के महासागरों में प्रवाहित होती रही है, जो **जलवायु** स्थिरता और महासागर में **कार्बन डाइऑक्साइड** और **पोषक तत्त्वों** के चक्र को प्रभावित करती रही है।
    - उदाहरण के लिये: **उत्तरी अटलांटिक गहरा जल (NADW)**, **अंटार्कटिक बॉटम जल (AABW)**।

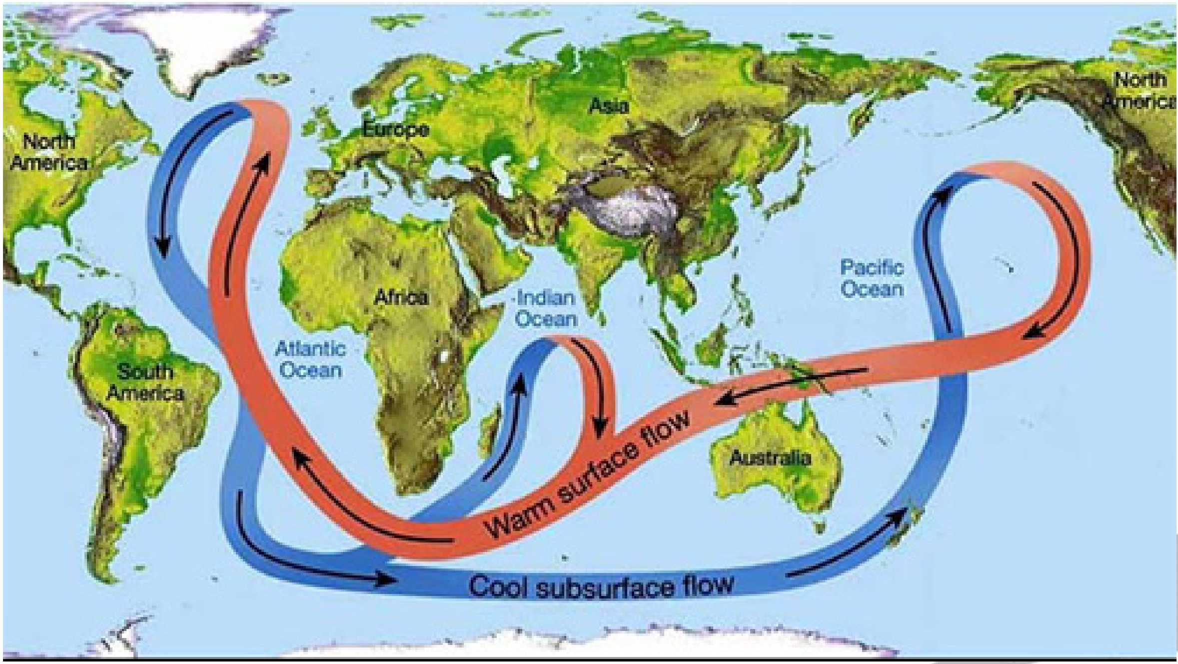

- **तापमान के आधार पर:**
  - **ठंडी धाराएँ:** ठंडी धाराएँ **ठंडे जल को गरम क्षेत्रों में ले जाती हैं।**
    - वे आमतौर पर निम्न से मध्य अक्षांशों पर **महाद्वीपों के पश्चिमी तटरेखाओं** के साथ तथा उच्च अक्षांशों पर पूर्वी तटरेखाओं के साथ पाई जाती हैं।
    - ये धाराएँ **तटीय क्षेत्रों में तापमान को नियंत्रित रखने** में मदद करती हैं और पोषक तत्वों को ऊपर उठाने में योगदान देती हैं, जिससे महासागरीय जीवन को समर्थन मिलता है।
    - उदाहरण के लिये: **क्यूराइल या ओयाशियो धारा (उत्तरी प्रशांत महासागर)** , **कैलिफोर्निया धारा (प्रशांत महासागर)।**
  - **गरम धाराएँ:** ये धाराएँ **गरम जल को ठंडे क्षेत्रों में ले जाती हैं** और आमतौर पर निचले और मध्य अक्षांशों में महाद्वीपों के पूर्वी तटरेखाओं के साथ-साथ उच्च अक्षांशों पर उत्तरी गोलार्द्ध में पश्चिमी तटरेखाओं के साथ पाई जाती हैं।
    - गरम धाराएँ तटीय जलवायु को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रायः मौसम की स्थिति सामान्य हो जाती है।
    - उदाहरण के लिये: **गल्फ स्ट्रीम (उत्तरी अटलांटिक महासागर), एंटलीज़ धारा (उत्तरी अटलांटिक महासागर)**

महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति के लिये उत्तरदायी कारक क्या हैं?

- महासागरीय धाराएँ प्राथमिक और द्वितीयक शक्तियों के संयोजन से प्रभावित होती हैं। ये शक्तियाँ महासागरीय जल की गति को आरंभ, निर्देशित और संशोधित करती हैं, वैश्विक जलवायु को आकार देती हैं और महासागरीय पारिस्थितिकी तंत्र को सहारा देती हैं।

प्राथमिक बल:

- **सूर्यातप**
  - **सूर्यातप** से गरम होने के कारण जल का विस्तार होता है, जिससे **भूमध्य रेखा** के पास समुद्र का स्तर मध्य अक्षांशों की तुलना में लगभग **8 सेमी** अधिक हो जाता है। इससे एक सामान्य प्रवणता बनती है, जिससे जल पूर्व से पश्चिम की ओर धीरे-धीरे बहता है।
- **वायु (वायुमंडलीय परिसंचरण)**
  - महासागरों की सतह पर बहने वाली पवनें घर्षण बल लगाती हैं, जिससे जल पवनों की दिशा में बहता है। पवनें महासागरीय धाराओं की शक्ति और दिशा दोनों को प्रभावित करती है, जो आगे चलकर **कोरिओलिस प्रभाव** से प्रभावित होती है।
    - उदाहरण के लिये, मानसूनी पवनें हिंद महासागर में मौसमी धाराओं को व्युत्क्रमित कर देती हैं।
  - **महासागरीय परिसंचरण** प्रतिरूप प्रायः वायुमंडलीय परिसंचरण को प्रतिबिंबित करते हैं, जिसमें **प्रतिचक्रवाती** (उच्च दबाव) प्रणालियाँ सामान्यतः मध्य अक्षांशों में व्याप्त होती हैं, जबकि **चक्रवाती** (निम्न दबाव) प्रणालियाँ उच्च अक्षांशों में अधिक सामान्य होती हैं।
  - **मानसूनी पवनओं** से प्रभावित क्षेत्रों में, जैसे कि उत्तरी **हिंद महासागर में** , पवन के प्रतिरूप के साथ धारा की दिशा मौसमी रूप से बदलती रहती है।
- **गुरुत्वाकर्षण:**
  - गुरुत्वाकर्षण जल को नीचे की ओर खींचता है, जिससे प्रवणता प्रभावित होती है और महासागरीय धारा प्रवाह में विविधता आती है।
- **कोरिओलिस बल:**
  - पृथ्वी के घूर्णन के कारण उत्पन्न होने वाले कोरियोलिस प्रभाव के कारण बहता जल **उत्तरी गोलार्द्ध में दाईं ओर** तथा **दक्षिणी गोलार्द्ध में बाईं ओर विक्षेपित** हो जाता है।
  - इसके परिणामस्वरूप **बड़ी वृत्ताकार धाराएँ** बनती हैं जिन्हें गाइरे के नाम से जाना जाता है।
    - उदाहरण के लिये, उत्तरी अटलांटिक महासागर में **सारगैसो सागर।**

        - **सारगैसो सागर** अटलांटिक महासागर में एक क्षेत्र है जो चार धाराओं से घिरा है, जो पवन की गति और कोरिओलिस प्रभाव द्वारा संचालित एक वृत्ताकार महासागरीय चक्र का निर्माण करता है, जो परिसंचरण प्रतिरूप को निर्धारित करता है।

द्वितीयक बल:

- **जल में लवणता में भिन्नता:**
    - तापमान और लवणता दोनों से प्रभावित जल घनत्व में भिन्नताएँ, सागरीय धाराओं की ऊर्ध्वाधर गति को संचालित करती हैं।
    - **उच्च लवणता के परिणामस्वरूप जल अधिक सघन होता है,** और इसी तरह, ठंडा जल गर्म जल की तुलना में अधिक सघन होता है। इस अंतर के कारण **सघन जल क्षेपित हो जाता है,** जबकि **विरल जल ऊपर उठता है,** जिससे **निरंतर ऊर्ध्वाधर परिसंचरण बनता है।**
- **जल का तापमान अंतर:**
    - ध्रुवीय क्षेत्रों में**, ठंडा, घना जल क्षेपित हो जाता है** और धीरे-धीरे **भूमध्य रेखा** की ओर बढ़ता है, जिससे महासागरीय तल पर **ठंडे जल की धाराएँ** बनती हैं।
    - इसके विपरीत, **गर्म जल की धाराएँ भूमध्य रेखा पर उत्पन्न होती हैं** , जहाँ गर्म जल **सतह के साथ ध्रुवों की ओर बहता है** और डूबते हुए ठंडे जल की जगह लेता है।
    - यह आदान-प्रदान एक **वैश्विक "कन्वेयर बेल्ट"** बनाता है जो **ऊष्मा का पुनर्वितरण** करता है**,** जलवायु प्रतिरूप को प्रभावित करता है, तथा महासागरीय पारिस्थितिकी तंत्र में तापमान संतुलन बनाए रखता है।

महासागरीय धाराओं की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

- **कॉरियोलिस प्रभाव और धाराओं की सामान्य गति:**
    - महासागरीय धाराओं की सामान्य गति **उत्तरी गोलार्द्ध में दक्षिणावर्त दिशा** में और **दक्षिणी गोलार्द्ध में वामावर्त दिशा में होती है, जो मुख्य रूप से कोरिओलिस बल** के कारण होती है। यह प्रतिरूप फेरेल के नियम के अनुरूप है।
    - एक महत्त्वपूर्ण अपवाद **हिंद महासागर** है**,** जहाँ मानसूनी पवनों के कारण धाराओं की दिशा मौसमी रूप से बदल जाती है।
- **गर्म और ठंडी धाराओं की गति:**
    - गर्म धाराएँ आमतौर पर ठंडे क्षेत्रों की ओर बहती हैं, जबकि ठंडी धाराएँ गर्म महासागरों की ओर बहती हैं।
    - निम्न अक्षांशों में, महाद्वीपों के पूर्वी तटों पर गर्म धाराएँ बहती हैं, और पश्चिमी तटों पर ठंडी धाराएँ बहती हैं। उच्च अक्षांशों में यह प्रतिरूप व्युत्क्रमित हो जाता है, जहाँ पश्चिमी तटों पर गर्म धाराएँ और पूर्वी तटों पर ठंडी धाराएँ बहती हैं।
- **अभिसरण और विचलन:**
    - अभिसरण तब होता है जब **गर्म और ठंडी धाराएँ मिलती हैं** , जिससे प्रायः **मिश्रण होता है और पोषक तत्त्व ऊपर आते हैं** , जो सागरीय जीवन का आधार हैं।
    - विचलन तब होता है जब एक **एकल धारा** विभिन्न दिशाओं में बहने वाली **अनेक धाराओं में विभाजित हो जाती है** , जिससे विशाल महासागरीय क्षेत्रों में ऊष्मा और पोषक तत्त्वों का वितरण सुगम हो जाता है।
- **तटीय प्रभाव:**
    - महासागरीय तटीय रेखाओं का आकार और स्थिति महासागरीय धाराओं की दिशा और गति को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। तटीय स्थलाकृति धाराओं को निर्देशित कर सकती है, जिससे उनके प्रवाह प्रतिरूप पर असर पड़ता है।
- **भूमिगत धाराएँ:**
    - महासागरीय धाराएँ केवल सतह तक ही सीमित नहीं रहतीं, बल्कि लवणता और तापमान में अंतर के कारण जल के नीचे भी उत्पन्न होती हैं।
    - उदाहरण के लिये, भूमध्य सागर का सघन, खारा जल नीचे गिरता है और जिब्राल्टर जलडमरूमध्य से होकर एक भूमिगत धारा के रूप में बहता है।

क्षेत्रीय जलवायु, मत्स्य पालन और नौवहन पर महासागरीय धाराओं का क्या प्रभाव है?

- **रेगिस्तान निर्माण:**
    - ठंडी महासागरीय धाराओं का **रेगिस्तान** निर्माण पर सीधा प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से **उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय महाद्वीपों** के **पश्चिमी तटों पर।**
    - ये धाराएँ **पवनों को ठंडा** कर देती हैं, जिससे **नमी कम** हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप **शुष्क परिस्थितियाँ और कोहरायुक्त मौसम** उत्पन्न होता है।
        - उदाहरण के लिये, पेरू के तट पर बहने वाली **ठंडी** हम्बोल्ट धारा**,** अटाकामा रेगिस्तान के निर्माण में योगदान देती है, जो पृथ्वी पर सबसे शुष्क स्थानों में से एक है।
- **वर्षा प्रतिरूप पर प्रभाव:**
    - गर्म महासागरीय धाराएँ तटीय क्षेत्रों और कभी-कभी आंतरिक क्षेत्रों में भी वर्षा लाने के लिये ज़िम्मेदार होती हैं।
    - उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय अक्षांशों में, गर्म धाराएँ महाद्वीपों के **पूर्वी तटों के समानांतर बहती हैं** , जो विशेष रूप से फ्लोरिडा और नेटाल जैसे क्षेत्रों में गर्म और बरसाती जलवायु में योगदान करती हैं।
    - **उपोष्णकटिबंधीय प्रतिचक्रवातों** के पश्चिमी किनारे पर स्थित इन क्षेत्रों में, विशेष रूप से गर्मियों के महीनों के दौरान, अधिक वर्षा होती है।
- **तटीय तापमान पर मध्यम प्रभाव:**
    - सागरीय धाराएँ तटीय क्षेत्रों में तापमान को मध्यम रखने में मदद करती हैं। उदाहरण के लिये, उत्तरी अटलांटिक बहाव **पश्चिमी यूरोप, खासकर ब्रिटिश द्वीपों (**उत्तरी अटलांटिक महासागर में द्वीपों का एक समूह) में गर्मी लाता है, जिससे अत्यधिक ठंडी सर्दियाँ नहीं

पड़तीं।
    - अफ्रीका के पश्चिमी तट पर बहने वाली ठंडी धारा, कनारी धारा, स्पेन, पुर्तगाल और आसपास के क्षेत्रों पर शीतलन प्रभाव डालती है, जिससे तापमान में कमी आती है और क्षेत्रीय जलवायु प्रभावित होती है।
- **मछली पकड़ने के आधार:**
    - **ठंडी और गरम समुद्री धाराओं के मिश्रण** से विश्व में मछली पकड़ने के कुछ सबसे समृद्ध क्षेत्र बनते हैं। ये क्षेत्र पोषक तत्त्वों और प्लवक से समृद्ध हैं, जो मछलियों के लिये प्राथमिक भोजन स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।
        - उदाहरणों में कनाडा के **न्यूफाउंडलैंड के पास ग्रैंड बैंक्स और जापान का उत्तरपूर्वी तट** शामिल हैं, जो दोनों ही अपने प्रचुर सागरीय जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं।
    - **महासागरीय धाराओं की गति और मिश्रण** ऑक्सीजन **के स्तर को बढ़ाने तथा प्लवक** की वृद्धि को बढ़ावा देने में मदद करते हैं, जिससे ये क्षेत्र मछली पकड़ने के लिये अनुकूल बन जाते हैं।
- **बूँदाबाँदी और कोहरे का निर्माण:**
    - गरम और ठंडी महासागरीय धाराओं के मिलने से अक्सर कोहरे के मौसम बनता है, जहाँ हल्की बूँदाबाँदी के रूप में वर्षा होती है। यह घटना विशेष रूप से न्यूफाउंडलैंड जैसे क्षेत्रों में ध्यान देने योग्य है, जहाँ **लैब्राडोर धारा (ठंडी) गल्फ स्ट्रीम (गरम)** से मिलती है जिसके परिणामस्वरूप कोहरा होता है जो इन क्षेत्रों में **नेविगेशन और मौसम के प्रतिरूप को प्रभावित** करता है।
- **उष्णकटिबंधीय चक्रवात:**
    - **गरम महासागरीय धाराएँ उष्णकटिबंधीय चक्रवातों** के निर्माण और तीव्रता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये धाराएँ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में गरम जल जमा करती हैं, जो चक्रवाती तूफानों के विकास के लिये आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती हैं। **हिंद महासागर** और **अटलांटिक महासागर** इन प्रक्रियाओं से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं।
- **नेविगेशन पर प्रभाव:**
    - **सागरीय धाराएँ जहाज़ों के मार्ग को प्रभावित** करके सागरीय नौवहन में सहायता करती हैं। **उत्तरी भूमध्यरेखीय बहाव** जैसी धाराएँ पश्चिम की ओर यात्रा करने वाले जहाज़ों की सहायता करती हैं, जैसा कि मैक्सिको से फिलीपींस जाने वाले जहाज़ के मामले में होता है।
    - इसके विपरीत जब जहाज़ों को पूर्व की ओर यात्रा करने की आवश्यकता होती है, जैसे कि फिलीपींस से मैक्सिको तक, तो वे **भूमध्यरेखीय धाराओं का** लाभ उठा सकते हैं।
    - सागरीय धाराओं की दिशा और गति सहित उनकी गहन समझ, सागरीय नौवहन मार्गों को अनुकूलित करने तथा वैश्विक व्यापार में ईंधन दक्षता को बढ़ाने के लिये महत्त्वपूर्ण है।

प्रमुख महासागरीय धाराएँ क्या हैं?

- **भूमध्यरेखीय धारा प्रणाली:**
    - **उत्तरी और दक्षिणी भूमध्यरेखीय धाराएँ: ये आर्कटिक को** छोड़कर सभी प्रमुख महासागरों में मौजूद हैं। ये प्रचलित व्यापारिक पवनों द्वारा संचालित होकर पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं।
    - **भूमध्यरेखीय प्रतिधारा:** ये उत्तर और दक्षिण भूमध्यरेखीय धाराओं के बीच स्थित होती हैं, यह भूमध्यरेखीय धाराओं की दिशा के विपरीत पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं। यह धारा भूमध्यरेखीय जल प्रवाह को संतुलित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- **अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (ACC):**
    - ACC एक महासागरीय धारा है जो अंटार्कटिका के चारों ओर पश्चिम से पूर्व की ओर दक्षिणावर्त बहती है। ACC का एक वैकल्पिक नाम वेस्ट विंड ड्रिफ्ट है।
- **हम्बोल्ट या पेरूवियन धारा:**
    - इस **कम लवणता वाली धारा का** सागरीय पारिस्थितिकी तंत्र बहुत बड़ा है तथा यह विश्व की प्रमुख पोषक प्रणालियों में से एक है।
        - यह नदी चिली के सुदूर दक्षिणी सिरे से दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ उत्तरी पेरू तक बहती है।
- **कुरील या ओयाशियो धारा:** यह उप-आर्कटिक महासागरीय धारा वामावर्त दिशा में परिचालित है।
    - यह आर्कटिक महासागर से निकलती है जो पश्चिमी उत्तरी प्रशांत महासागर में बेरिंग सागर के माध्यम से दक्षिण में बहती है।
    - यह **पोषक तत्त्वों से भरपूर धारा है।**
    - यह उत्तरी प्रशांत बहाव बनाने के लिये जापानी पूर्वी तट से **कुरोशियो** से टकराता है।
- **कैलिफोर्निया की धारा:** यह उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ दक्षिण की ओर बहने वाली **अलेउतियन धारा** का विस्तार है।
    - यह **उत्तरी प्रशांत घूर्णन (North Pacific Gyre)** का एक हिस्सा है ।
    - यह एक मज़बूत अपवेलिंग का क्षेत्र है।
- **लैब्राडोर की धारा:** यह **आर्कटिक महासागर** से दक्षिण की ओर बहती है और उत्तर की ओर बढ़ती हुई गल्फ स्ट्रीम से मिलती है।
    - कोल्ड लैब्राडोर करंट और वार्म गल्फ स्ट्रीम का संयोजन मछली पकड़ने हेतु दुनिया का सबसे बड़ा क्षेत्र माना जाता है।
- **कनारी: यह फ्रैम स्ट्रेट** और **केप फेयरवेल** के बीच फैली एक कम लवणता वाली धारा है।
    - यह आर्कटिक को सीधे उत्तरी अटलांटिक से जोड़ती है।
    - यह आर्कटिक के लिये मीठे जल का एक प्रमुख स्रोत है।
    - आर्कटिक से **समुद्री-बर्फ के निर्यात** में इसका प्रमुख योगदान है।
- **बेंगुएला की धारा: यह** दक्षिणी गोलार्द्ध की **पश्चिमी पवन प्रवाह** की एक शाखा है ।
    - यह दक्षिण अटलांटिक महासागर गाइरे के पूर्वी भाग में बहती है।
    - इसमें लवणता कम है, अपवेलिंग की उपस्थिति है और मछली पकड़ने के लिये यह उत्कृष्ट क्षेत्र है।
- **फाकलैंड की धारा:** यह **अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा** की एक शाखा है ।
    - इसे **माल्विनास धारा** के नाम से भी जाना जाता है।
    - इसका नाम फाकलैंड द्वीप समूह के नाम पर रखा गया है।

    - ठंडी जलधारा है। इसमें ब्राजील धारा आकर मिल जाती है।
- **पूर्वोत्तर मानसून धारा:** भारतीय उत्तर भूमध्यरेखीय धारा भूमध्य रेखा को पार करते हुए दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम की ओर बहती है।
- **सोमाली धारा:** यह अटलांटिक महासागर में गल्फ स्ट्रीम के समरूप है।
    - धारा मानसून से काफी प्रभावित होती है।
    - यह प्रमुख अपवेलिंग प्रणालियों का क्षेत्र है।
- **पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई जलधारा:** इसे पश्चिमी पवन बहाव के नाम से भी जाना जाता है।
    - यह अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा का एक हिस्सा है।
    - यह एक मौसमी धारा है जो गर्मियों में प्रबल तथा सर्दियों में कमज़ोर होती है।
- **कुरोशियो:** इस पश्चिमी सीमावर्ती धारा को **जापान धारा या काली धारा** भी कहा जाता है। जापानी भाषा में "कुरोशियो" शब्द का अर्थ "काली धारा" है।
    - यह अटलांटिक महासागर में गल्फ स्ट्रीम का प्रशांत समकक्ष है।
    - इस धारा की सतह का औसत तापमान आसपास के महासागर की तुलना में अधिक गर्म है।
    - इससे जापान के तापमान को नियंत्रित करने में भी मदद मिलती है, जो अपेक्षाकृत अधिक गर्म है।
- **उत्तरी प्रशांत धारा:** यह **कुरियोशियो और ओयाशियो** के टकराव से बनती है।
    - यह पश्चिमी उत्तर प्रशांत महासागर के किनारे वामावर्त दिशा में परिचालित होता है।
- **अलास्का धारा:** यह उत्तरी प्रशांत महासागर के एक हिस्से के उत्तर की ओर मुड़ने के परिणामस्वरूप बनती है।
- **पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई धारा:** यह दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई तट के साथ उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय सागरीय जीवों को उनके आवासों तक ले जाने का कार्य करती है।
- **फ्लोरिडा धारा:** यह फ्लोरिडा प्रायद्वीप के चारों ओर बहती है तथा केप हेटेरस पर गल्फ स्ट्रीम में मिलती है।
- **गल्फ स्ट्रीम:** यह एक पश्चिमी तेज़ धारा है जो मुख्य रूप से वायु दबाव द्वारा संचालित होती है।
    - यह उत्तरी अटलांटिक बहाव (उत्तरी यूरोप और दक्षिणी धारा को पार करते हुए) तथा कनारी धारा (पश्चिम अफ्रीका का पुनर्चक्रण) में विभाजित हो जाता है।
- **नॉर्वेजियन धारा:** यह वेज (wedge) के आकार का धारा जल के दो प्रमुख आर्कटिक अंतर्वाहों में से एक है।
    - यह उत्तरी अटलांटिक बहाव की एक शाखा है और कभी-कभी इसे गल्फ स्ट्रीम का विस्तार भी माना जाता है।
- **ब्राज़ीलियन धारा** : यह ब्राज़ील के दक्षिणी तट के साथ रियो डी ला प्लाटा तक बहती है।
    - यह अर्जेंटीना सागर में ठंडे फॉकलैंड करंट में शामिल हो जाती है, जिससे यहाँ समशीतोष्ण समुद्र की स्थिति बनती है।
- **मोज़ाम्बिक धारा:** यह मोज़ाम्बिक चैनल में अफ्रीकी पूर्वी तट के साथ मोज़ाम्बिक और मेडागास्कर द्वीप के बीच बहती है।
- **अगुलहास धारा:** यह सबसे बड़ी पश्चिमी बाउंड्री महासागरीय धारा है।
    - यह नदी अफ्रीका के पूर्वी तट के साथ दक्षिण की ओर बहती है।
- **दक्षिण-पश्चिम मानसून धारा:** यह दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम (जून-अक्तूबर) के दौरान हिंद महासागर पर हावी होती है।
    - यह पूर्व की ओर बहने वाली एक व्यापक महासागरीय धारा है जो अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में फैली हुई है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

??????????

प्रश्न. विषुवतीय प्रतिधाराओं (इक्वेटोरियल काउंटर-करेंट) के पूर्वाभिमुख प्रवाह की व्याख्या किससे होती है? (2015)

(a) पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूर्णन
(b) दो विषुवतीय धाराओं का अभिसरण (कन्वर्जेंस)
(c) जल की लवणता में अंतर
(d) विषुवत्-वृत्त के पास प्रशांतमण्डल मेखला (बेल्टऑफ काम) का होना

उत्तर: (b)

??????

प्रश्न. महासागर धाराएँ और जल राशियाँ सागरीय जीवन और तटीय पर्यावरण पर अपने प्रभावों में किस-किस प्रकार परस्पर भिन्न होते हैं? उपयुक्त उदाहरण दीजिये। (2019)

प्रश्न. महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति के उत्तरदायी कारकों को स्पष्ट कीजिये। वे प्रादेशिक जलवायुओं, सागरीय जीवन तथा नौचालन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं? (2015)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ocean-currents-5